

मूल्य आधारित शिक्षा द्वारा विद्यार्थियों में सामाजिक उत्तरदायित्व के विकास का अध्ययन

श्रीमती अनुपमा अम्बष्ट

सहायक प्राध्यापक

सी.टी.ई.

रायपुर, छत्तीसगढ़



<http://www.gjiirp.org/> || Vol. 2 No. 3 (2026): Special August Issue

Date of Submission: 15-07-2026

Date of Acceptance: 31-07-2026

Date of Publication: 20-08-2026

सारांश — मूल्य आधारित शिक्षा विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास के साथ-साथ उनके नैतिक, सामाजिक और नागरिक दायित्वों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य यह विश्लेषित करना है कि मूल्य केंद्रित शिक्षण से विद्यार्थियों में सहयोग, सहानुभूति, सामाजिक संवेदनशीलता, सामुदायिक सहभागिता और उत्तरदायी व्यवहार किस सीमा तक विकसित होता है। पूर्ववर्ती अध्ययनों में नैतिक शिक्षा, चरित्र निर्माण और नागरिक चेतना पर पर्याप्त विचार हुआ है, किंतु मूल्य आधारित अधिगम और प्रत्यक्ष सामाजिक उत्तरदायित्व व्यवहार के मध्य मापन योग्य संबंध अपेक्षाकृत कम स्पष्ट किया गया है। विशेष रूप से विद्यालयी और उच्चतर शैक्षिक परिवेश में डिजिटल संपर्क, सामाजिक विविधता तथा सामुदायिक चुनौतियों के संदर्भ में इस संबंध का समेकित परीक्षण सीमित रहा है। प्रस्तावित अध्ययन विद्यार्थियों की मूल्य ग्रहणशीलता, सामाजिक निर्णय क्षमता, सहयोगी प्रवृत्ति और उत्तरदायित्वपूर्ण सहभागिता को परस्पर संबंधित आयामों के रूप में देखता है। अध्ययन में व्यवहार संकेतकों, स्थितिजन्य निर्णयों, सामुदायिक गतिविधियों और शिक्षण अनुभवों को सम्मिलित कर सामाजिक उत्तरदायित्व के बहुआयामी स्वरूप का विश्लेषण किया जाएगा। अध्ययन का प्रमुख योगदान यह है कि यह मूल्य शिक्षा को केवल नैतिक ज्ञान के रूप में न देखकर उसे प्रत्यक्ष सामाजिक व्यवहार और नागरिक सहभागिता से जोड़ता है। प्राप्त निष्कर्ष शिक्षण संस्थानों में ऐसे पाठ्य एवं सह-पाठ्य कार्यक्रमों के निर्माण में उपयोगी हो सकते हैं जो विद्यार्थियों को संवेदनशील, सहयोगी और उत्तरदायी नागरिक के रूप में विकसित करें।

प्रमुख शब्द — मूल्य आधारित शिक्षा, सामाजिक उत्तरदायित्व, नैतिक विकास, विद्यार्थी सहभागिता, नागरिक चेतना, सामाजिक संवेदनशीलता

परिचय

शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान, कौशल और व्यावसायिक दक्षता प्रदान करना नहीं है, बल्कि ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण करना भी है जो समाज के प्रति संवेदनशील, उत्तरदायी और नैतिक दृष्टि से सजग हो। किसी भी समाज की दीर्घकालिक स्थिरता इस बात पर निर्भर करती है कि उसकी युवा पीढ़ी व्यक्तिगत हितों और सामाजिक दायित्वों के मध्य संतुलन स्थापित कर पाती है या नहीं। इस संदर्भ में मूल्य आधारित शिक्षा एक ऐसी शैक्षिक प्रक्रिया के रूप में उभरती है जिसके माध्यम से विद्यार्थियों में सत्यनिष्ठा, सहानुभूति, न्यायबोध, सहयोग, सम्मान, अनुशासन, सेवा भावना और सामुदायिक उत्तरदायित्व विकसित किए जा सकते हैं।

वर्ष २०२१ के बाद शिक्षा संबंधी चर्चाओं में विद्यार्थियों के भावनात्मक स्वास्थ्य, सामाजिक सहभागिता, डिजिटल नागरिकता और उत्तरदायी व्यवहार को अपेक्षाकृत अधिक महत्व प्राप्त हुआ है। महामारी के पश्चात शिक्षा व्यवस्था में आए परिवर्तनों ने यह स्पष्ट किया कि केवल विषयगत अधिगम पर्याप्त नहीं है। विद्यार्थियों को विविध सामाजिक परिस्थितियों में सहयोग, संवेदनशील संवाद, सामूहिक निर्णय, पारस्परिक सम्मान और सामाजिक जिम्मेदारी जैसे गुणों की भी आवश्यकता होती है। आभासी शिक्षण, सामाजिक माध्यमों के बढ़ते प्रभाव, तीव्र सूचना प्रवाह और विचारों के ध्रुवीकरण ने मूल्य शिक्षा की प्रासंगिकता को और अधिक बढ़ाया है।

मूल्य आधारित शिक्षा में ऐसे शिक्षण अनुभव सम्मिलित होते हैं जिनसे विद्यार्थी सही और गलत के बीच अंतर समझने के साथ-साथ अपने निर्णयों के सामाजिक परिणामों को भी पहचान सके। इस प्रकार की शिक्षा केवल नैतिक उपदेश तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वास्तविक जीवन की परिस्थितियों, समूह गतिविधियों, सामुदायिक सेवा, सहानुभूतिपूर्ण संवाद, सामाजिक समस्या समाधान और चिंतनशील

अभ्यासों के माध्यम से व्यवहारगत परिवर्तन का प्रयास करती है। जब विद्यार्थी शिक्षा के माध्यम से यह समझता है कि उसका व्यवहार अन्य व्यक्तियों, समुदायों और संस्थाओं को प्रभावित करता है, तब सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित होने की संभावना बढ़ती है।

सामाजिक उत्तरदायित्व का अर्थ केवल सामाजिक सेवा करना नहीं है। इसमें सार्वजनिक संपत्ति के प्रति जिम्मेदारी, पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता, कमजोर समूहों के प्रति सम्मान, सामुदायिक नियमों का पालन, असमानता के प्रति जागरूकता, सहकारी व्यवहार, उत्तरदायी डिजिटल आचरण और सामूहिक कल्याण की भावना भी सम्मिलित होती है। विद्यार्थी जीवन में इन गुणों का विकास भविष्य के सामाजिक व्यवहार और नागरिक सहभागिता को प्रभावित कर सकता है। अतः मूल्य आधारित शिक्षा और सामाजिक उत्तरदायित्व का संबंध शिक्षा अनुसंधान के लिए एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है।

समकालीन शैक्षिक संदर्भ में एक महत्वपूर्ण चुनौती यह है कि मूल्य शिक्षा अनेक संस्थानों में पृथक् गतिविधि, प्रार्थना सभा, विशेष व्याख्यान या नैतिक पाठ तक सीमित रह जाती है। ऐसी व्यवस्था में यह निर्धारित करना कठिन हो जाता है कि विद्यार्थियों द्वारा ग्रहण किए गए मूल्य वास्तविक व्यवहार में किस सीमा तक परिवर्तित हुए। उदाहरणतः विद्यार्थी सहयोग, समानता या पर्यावरणीय दायित्व के सिद्धांतों को जान सकता है, किंतु समूह कार्य, सामुदायिक सहभागिता या दैनिक निर्णयों में उसका व्यवहार इन मूल्यों के अनुरूप हो, यह आवश्यक नहीं है। यही अंतर ज्ञानात्मक मूल्यबोध और व्यवहारगत सामाजिक उत्तरदायित्व के बीच अनुसंधान की आवश्यकता उत्पन्न करता है।

वर्तमान अध्ययन का केंद्रीय शोध-अंतर इसी बिंदु पर आधारित है। उपलब्ध अध्ययनों में मूल्य आधारित शिक्षा को प्रायः नैतिक विकास, चरित्र निर्माण, अनुशासन या नागरिकता शिक्षा से जोड़ा गया है। दूसरी ओर सामाजिक उत्तरदायित्व को सामुदायिक सेवा, पर्यावरणीय व्यवहार या नागरिक भागीदारी के संदर्भ में अलग-अलग अध्ययन किया गया है। किंतु मूल्य ग्रहणशीलता, स्थितिजन्य नैतिक निर्णय, सहयोगी व्यवहार, सामाजिक संवेदनशीलता और प्रत्यक्ष सामाजिक सहभागिता को एकीकृत संरचना के अंतर्गत जोड़कर देखने वाले अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित हैं। विशेष रूप से बदलते डिजिटल और सामाजिक परिवेश में यह प्रश्न महत्वपूर्ण है कि क्या मूल्य आधारित शिक्षण वास्तविक जीवन तथा आभासी सामाजिक व्यवहार दोनों में उत्तरदायित्व को प्रभावित करता है।

इस अध्ययन में मूल्य शिक्षा को स्थिर विषयवस्तु की बजाय एक सक्रिय शैक्षिक प्रक्रिया माना गया है। इसमें शिक्षक की भूमिका, कक्षा संवाद, सहकर्मी अंतःक्रिया, सामुदायिक गतिविधि, सामाजिक समस्या आधारित शिक्षण, चिंतनात्मक लेखन और सामूहिक निर्णय अभ्यास जैसे आयाम शामिल किए जा सकते हैं। इसी प्रकार सामाजिक उत्तरदायित्व को भी एकल संकेतक के स्थान पर बहुआयामी अवधारणा के रूप में समझा जाएगा, जिसमें सामाजिक सहायता प्रवृत्ति, सार्वजनिक दायित्व, न्याय संवेदनशीलता, पर्यावरणीय जिम्मेदारी, सहयोगी व्यवहार और उत्तरदायी डिजिटल सहभागिता सम्मिलित होगी।



Fig. 1: मूल्य से समाज तक: जिम्मेदार नागरिक निर्माण की शैक्षिक यात्रा

अध्ययन का प्राथमिक उद्देश्य यह समझना है कि मूल्य आधारित शिक्षण के विभिन्न घटक विद्यार्थियों के सामाजिक उत्तरदायित्व को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। साथ ही यह भी परीक्षण योग्य प्रश्न है कि केवल नैतिक ज्ञान की तुलना में सहभागी और अनुभवात्मक मूल्य शिक्षा अधिक प्रभावी है या नहीं। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों की आयु, शैक्षिक स्तर, सामुदायिक अनुभव और डिजिटल सहभागिता जैसे कारक इस संबंध को परिवर्तित कर सकते हैं। इस प्रकार अध्ययन प्रत्यक्ष प्रभाव के साथ-साथ व्यवहारगत मध्यस्थताओं की भी पड़ताल करने की दिशा प्रस्तुत करता है।

शिक्षण संस्थानों के लिए इस अध्ययन का महत्व व्यावहारिक भी है। यदि यह स्पष्ट किया जा सके कि कौन-सी मूल्य आधारित गतिविधियाँ विद्यार्थियों में सामाजिक उत्तरदायित्व के विशिष्ट आयामों को अधिक प्रभावित करती हैं, तो पाठ्यक्रम निर्माण को अधिक उद्देश्यपरक बनाया जा सकता है। उदाहरणतः केवल मूल्य कथाओं और नैतिक पाठों के स्थान पर सामुदायिक समस्या समाधान, सहयोगात्मक अधिगम, जनहित परियोजनाएँ, सामाजिक निरीक्षण गतिविधियाँ और आत्मचिंतन अभ्यास शामिल किए जा सकते हैं। इस प्रकार मूल्य शिक्षा को पाठ्यक्रम के किनारे स्थित विषय के बजाय समग्र शिक्षण प्रक्रिया का अभिन्न भाग बनाया जा सकता है।

सामाजिक दृष्टि से भी इसका महत्व व्यापक है। तेजी से बदलते सामाजिक वातावरण में विद्यार्थी विविध मतों, पहचानों और हितों से प्रतिदिन संपर्क में आते हैं। ऐसे में असहमति के प्रति सम्मान, तथ्यपरक संवाद, सामाजिक सहयोग और सामुदायिक उत्तरदायित्व आवश्यक नागरिक गुण बन चुके हैं। यदि शैक्षिक संस्थान इन गुणों के विकास को व्यवस्थित रूप से प्रोत्साहित करते हैं, तो शिक्षा सामाजिक समरसता और उत्तरदायी नागरिकता के निर्माण में प्रभावी माध्यम बन सकती है।

इस अध्ययन की विशिष्टता यह है कि इसमें मूल्य शिक्षा को केवल आंतरिक नैतिक धारणा के रूप में नहीं, बल्कि दृश्य और मापन योग्य सामाजिक व्यवहार से जोड़ने का प्रयास किया गया है। आगे के विश्लेषण में मूल्य ग्रहणशीलता, व्यवहार परिवर्तन, सहभागिता की आवृत्ति, सामाजिक निर्णय और उत्तरदायित्वपूर्ण क्रिया के मध्य संबंधों को एक समेकित ढाँचे में परीक्षण योग्य बनाया जाएगा।

साहित्य समीक्षा

मूल्य आधारित शिक्षा का वैचारिक आधार इस धारणा पर आधारित है कि विद्यालय और उच्चतर शिक्षण संस्थान केवल ज्ञान हस्तांतरण के स्थान नहीं, बल्कि सामाजिक और नैतिक विकास के भी प्रमुख केंद्र हैं। मूल्य शिक्षा पर प्रारंभिक विमर्श में सत्य, अनुशासन, कर्तव्य, सहानुभूति और चरित्र निर्माण को केंद्रीय स्थान दिया गया। समय के साथ यह दृष्टिकोण विस्तृत हुआ और इसमें मानवाधिकार, सामाजिक न्याय, पर्यावरणीय चेतना, विविधता का सम्मान तथा लोकतांत्रिक सहभागिता जैसे आयाम सम्मिलित होने लगे।

हाल के शैक्षिक विमर्श में यह विचार अधिक प्रबल हुआ है कि मूल्य शिक्षा को उपदेशात्मक पद्धति के बजाय अनुभवात्मक स्वरूप दिया जाना चाहिए। विद्यार्थियों को केवल यह बताना कि कौन-सा व्यवहार उचित है, व्यवहार परिवर्तन के लिए पर्याप्त नहीं माना जाता। जब विद्यार्थी वास्तविक सामाजिक समस्याओं, समूह निर्णयों, सामुदायिक कार्यों और सहकर्म सहभागिता में भाग लेते हैं, तब नैतिक मूल्यों को व्यवहारगत संदर्भ प्राप्त होता है। इस प्रकार मूल्य शिक्षा का प्रभाव अधिगम अनुभव की प्रकृति पर निर्भर करता है।

सामाजिक उत्तरदायित्व संबंधी अध्ययनों में यह पाया गया है कि जिम्मेदारी का विकास व्यक्तिगत नैतिक दृष्टिकोण के साथ-साथ सामाजिक अनुभव से भी प्रभावित होता है। परिवार, विद्यालय, सहकर्म समूह और समुदाय विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार के निर्माण में महत्वपूर्ण कारक हैं। विद्यालयी वातावरण में यदि सहयोग, पारदर्शिता, न्यायपूर्ण व्यवहार और सामूहिक उत्तरदायित्व को प्रोत्साहन मिलता है, तो विद्यार्थी इन मूल्यों को व्यवहार में अपनाने की अधिक संभावना रखते हैं।

सहानुभूति को सामाजिक उत्तरदायित्व का एक प्रमुख मनोवैज्ञानिक आधार माना गया है। जो विद्यार्थी दूसरों की परिस्थितियों को समझने और उनके दृष्टिकोण को स्वीकार करने में सक्षम होते हैं, उनमें सहायता, सहयोग और सामाजिक न्याय से संबंधित व्यवहार अधिक विकसित हो सकता है। मूल्य आधारित गतिविधियों में कथा चर्चा, भूमिका निर्वहन, सामाजिक परिस्थितियों का विश्लेषण तथा सामुदायिक अनुभव सहानुभूति के विकास में सहायक हो सकते हैं।

सामाजिक उत्तरदायित्व का एक दूसरा महत्वपूर्ण आयाम सहयोगात्मक व्यवहार है। समूह कार्य और सामूहिक समस्या समाधान विद्यार्थियों को व्यक्तिगत उपलब्धि की सीमा से बाहर जाकर साझा उत्तरदायित्व की समझ प्रदान करते हैं। यदि समूह अधिगम को केवल शैक्षणिक कार्य

विभाजन तक सीमित न रखकर सामाजिक दायित्व और पारस्परिक सहयोग से जोड़ा जाए, तो यह उत्तरदायी व्यवहार को अधिक दृढ़ कर सकता है।

समकालीन साहित्य में नागरिक चेतना और सामाजिक सहभागिता के बीच भी स्पष्ट संबंध पर चर्चा हुई है। नागरिकता शिक्षा से जुड़े अध्ययनों ने इस बात पर बल दिया है कि विद्यार्थियों को अधिकारों की जानकारी के साथ दायित्वों की समझ भी विकसित करनी चाहिए। लोकतांत्रिक समाज में उत्तरदायी नागरिकता का अर्थ मतदान अथवा नियम पालन तक सीमित नहीं है; इसमें सार्वजनिक प्रश्नों पर विचार, सामुदायिक गतिविधियों में भागीदारी, विविध दृष्टिकोणों का सम्मान तथा सार्वजनिक हित के प्रति प्रतिबद्धता भी सम्मिलित है।

वर्ष २०२१ से २०२६ के बीच शिक्षा में डिजिटल संपर्क की बढ़ती भूमिका ने सामाजिक उत्तरदायित्व के नए आयाम उत्पन्न किए हैं। विद्यार्थी अब केवल भौतिक कक्षा और समुदाय में ही सामाजिक व्यवहार नहीं करते, बल्कि डिजिटल मंचों पर भी संवाद, प्रतिक्रिया, सूचना साझा करने और सामाजिक समूहों में भाग लेने लगे हैं। इसलिए उत्तरदायी डिजिटल व्यवहार, असत्य सूचना से बचाव, अपमानजनक संवाद से परहेज और दूसरों की निजता के सम्मान जैसे तत्व भी समकालीन मूल्य शिक्षा का हिस्सा माने जा सकते हैं।

डिजिटल सामाजिक वातावरण ने मूल्य शिक्षा के लिए अवसर और चुनौती दोनों उत्पन्न किए हैं। एक ओर डिजिटल माध्यम सामाजिक मुद्दों पर जागरूकता और सहभागिता बढ़ा सकते हैं, दूसरी ओर असत्य सूचना, वैचारिक धुवीकरण, आक्रामक संवाद और अनाम व्यवहार जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। इस कारण मूल्य आधारित शिक्षा का दायरा अब पारंपरिक नैतिकता से आगे बढ़कर डिजिटल सामाजिक उत्तरदायित्व तक विस्तृत होना आवश्यक है।

पर्यावरणीय उत्तरदायित्व भी हाल के मूल्य शिक्षा विमर्श का महत्वपूर्ण आयाम है। विद्यालयों और महाविद्यालयों में पर्यावरण संरक्षण, संसाधन बचत, स्वच्छता और स्थानीय पारिस्थितिकी संबंधी गतिविधियों को सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ा जा रहा है। ऐसी गतिविधियाँ विद्यार्थियों को यह समझने में सहायता करती हैं कि व्यक्तिगत उपभोग और सार्वजनिक पर्यावरण के बीच सीधा संबंध है। इस प्रकार मूल्य शिक्षा सामाजिक और पर्यावरणीय दायित्व के सम्मिलित विकास का माध्यम बन सकती है।

कुछ अध्ययनों में सेवा आधारित अधिगम को मूल्य विकास के प्रभावी माध्यम के रूप में देखा गया है। जब विद्यार्थी वृद्ध सहायता, स्वच्छता, साक्षरता, पर्यावरण संरक्षण या सामुदायिक जागरूकता जैसी गतिविधियों में भाग लेते हैं, तो वे सामाजिक समस्याओं को प्रत्यक्ष रूप से समझते हैं। इससे केवल ज्ञान वृद्धि नहीं होती, बल्कि सामाजिक संवेदनशीलता और जिम्मेदारी की भावना भी विकसित हो सकती है।

इसके बावजूद उपलब्ध साहित्य की एक सीमा यह है कि अनेक अध्ययन मूल्य शिक्षा के परिणाम को विद्यार्थियों के दृष्टिकोण या स्व-प्रतिवेदन के

आधार पर मापते हैं। ऐसे मापन में सामाजिक रूप से स्वीकार्य उत्तर देने की प्रवृत्ति परिणामों को प्रभावित कर सकती है। यदि विद्यार्थी स्वयं को जिम्मेदार, सहयोगी या नैतिक बताता है, तो यह आवश्यक नहीं कि वास्तविक सामाजिक परिस्थिति में उसका व्यवहार भी वैसा ही हो। इसलिए व्यवहार संकेतकों और स्थितिजन्य निर्णयों को सम्मिलित करने की आवश्यकता दिखाई देती है।

दूसरी सीमा यह है कि मूल्य शिक्षा और सामाजिक उत्तरदायित्व का अध्ययन अक्सर किसी एक आयाम पर केंद्रित रहता है। उदाहरणतः केवल सहानुभूति, केवल पर्यावरणीय व्यवहार या केवल नागरिक जागरूकता का परीक्षण किया जाता है। इससे सामाजिक उत्तरदायित्व की समग्र संरचना स्पष्ट नहीं हो पाती। वर्तमान अध्ययन इस सीमा को संबोधित करते हुए बहुआयामी मूल्यांकन की दिशा अपनाता है।

एक अन्य शोध-अंतर यह है कि मूल्य आधारित शिक्षण की तीव्रता और प्रकृति को कई अध्ययनों में समान मान लिया जाता है। वास्तविकता में व्याख्यान आधारित नैतिक शिक्षा, चर्चा आधारित मूल्य शिक्षा, समस्या आधारित शिक्षण, सेवा आधारित अधिगम और सामाजिक परियोजना आधारित गतिविधियों का प्रभाव समान नहीं हो सकता। इसलिए शिक्षण पद्धति के प्रकार को सामाजिक उत्तरदायित्व से अलग-अलग जोड़कर देखने की आवश्यकता है।

इसी प्रकार विद्यार्थी की सामाजिक पृष्ठभूमि और अनुभव भी महत्वपूर्ण हो सकते हैं। जिन विद्यार्थियों को पूर्व से सामुदायिक गतिविधियों, सामाजिक संगठनों या स्वयंसेवी कार्यक्रमों का अनुभव है, उनमें उत्तरदायित्व संबंधी व्यवहार अलग स्तर का हो सकता है। अतः केवल शैक्षिक हस्तक्षेप को प्रभाव का एकमात्र स्रोत मानना पर्याप्त नहीं है।

वर्तमान अध्ययन इन विभिन्न सीमाओं को ध्यान में रखते हुए एक ऐसा शोध ढाँचा प्रस्तावित करता है जिसमें मूल्य आधारित शिक्षा को ज्ञानात्मक, भावात्मक और व्यवहारगत घटकों में देखा जाएगा। सामाजिक उत्तरदायित्व को सहयोग, सहानुभूति, सार्वजनिक दायित्व, पर्यावरणीय चेतना, डिजिटल जिम्मेदारी और सामुदायिक सहभागिता जैसे आयामों के माध्यम से मापा जाएगा। इस प्रकार मूल्य शिक्षा और सामाजिक उत्तरदायित्व के मध्य संबंध का अधिक व्यापक और व्यवहारपरक विश्लेषण संभव होगा।

साहित्य समीक्षा से यह निष्कर्ष निकलता है कि मूल्य आधारित शिक्षा और सामाजिक उत्तरदायित्व के बीच सैद्धांतिक संबंध पर्याप्त रूप से स्वीकार किया गया है, परंतु व्यवहारगत सत्यापन, बहुआयामी मापन और डिजिटल सामाजिक संदर्भ का समेकित परीक्षण अभी भी अपेक्षाकृत सीमित है। इसलिए वर्तमान अध्ययन का शोध-अंतर केवल यह निर्धारित करना नहीं है कि मूल्य शिक्षा उपयोगी है या नहीं, बल्कि यह जानना है कि कौन-से मूल्य आधारित शिक्षण घटक किस प्रकार के सामाजिक उत्तरदायित्व व्यवहार को प्रभावित करते हैं और यह परिवर्तन किस प्रकार मापन योग्य रूप में अभिव्यक्त होता है।

प्रस्तावित कार्यविधि

प्रस्तुत अध्ययन में मिश्रित विश्लेषणात्मक रूपरेखा अपनाई गई है, जिसका उद्देश्य मूल्य आधारित शिक्षा और विद्यार्थियों में सामाजिक उत्तरदायित्व के विकास के बीच संबंध को केवल धारणा-आधारित स्तर पर नहीं, बल्कि व्यवहारगत संकेतकों के आधार पर भी समझना है। अध्ययन की केंद्रीय मान्यता यह है कि मूल्य आधारित शिक्षा का प्रभाव तभी सार्थक माना जा सकता है जब वह विद्यार्थियों के निर्णय, सहयोग, सामाजिक संवेदनशीलता, सामुदायिक सहभागिता और उत्तरदायी आचरण में दिखाई दे।



Fig. 2: संस्कार से सामाजिक चेतना तक: उत्तरदायी नागरिकता की ओर

अध्ययन के लिए बहु-स्तरीय नमूना चयन पद्धति प्रस्तावित की गई। इसमें माध्यमिक, उच्च माध्यमिक तथा स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया। प्रतिभागियों को आयु, शैक्षिक स्तर, लिंग, ग्रामीण-शहरी पृष्ठभूमि और सामुदायिक अनुभव के आधार पर वर्गीकृत किया गया। इस वर्गीकरण का उद्देश्य यह देखना था कि मूल्य आधारित शिक्षा का प्रभाव विभिन्न सामाजिक और शैक्षिक परिस्थितियों में किस प्रकार बदलता है।

अध्ययन में मूल्य आधारित शिक्षा को पाँच प्रमुख आयामों में विभाजित किया गया: सहानुभूति, सत्यनिष्ठा, सहयोग, सामाजिक न्याय चेतना और सामुदायिक दायित्व। सामाजिक उत्तरदायित्व को भी बहुआयामी रूप में मापा गया, जिसमें समूह सहयोग, सामाजिक समस्या समाधान, पर्यावरणीय जिम्मेदारी, सार्वजनिक संसाधनों के प्रति संवेदनशीलता, डिजिटल सामाजिक व्यवहार और सामुदायिक सेवा में भागीदारी को सम्मिलित किया गया।

अध्ययन में केवल प्रश्नावली पर निर्भर रहने के बजाय बहु-स्रोत सूचना संग्रह पद्धति अपनाई गई। विद्यार्थियों के स्व-प्रतिवेदन के साथ शिक्षक अवलोकन, समूह गतिविधियों में सहभागिता, स्थितिजन्य निर्णय

परीक्षण और सामुदायिक कार्यों का लेखा-जोखा भी सम्मिलित किया गया। इससे सामाजिक रूप से वांछनीय उत्तर देने की प्रवृत्ति के प्रभाव को कम करने का प्रयास किया गया।

मूल्य आधारित शिक्षण हस्तक्षेप को बारह सप्ताह की अवधि में संचालित करने की रूपरेखा प्रस्तावित की गई। प्रत्येक सप्ताह विद्यार्थियों को एक केंद्रीय मूल्य से संबंधित शिक्षण गतिविधि दी गई। इन गतिविधियों में सामाजिक परिस्थिति विश्लेषण, समूह चर्चा, भूमिका निर्वहन, सामुदायिक समस्या समाधान, आत्मचिंतन लेखन, पर्यावरणीय गतिविधि और डिजिटल आचरण संबंधी निर्णय अभ्यास सम्मिलित थे।

अध्ययन में पूर्व-परीक्षण और पश्च-परीक्षण संरचना का उपयोग किया गया। प्रारंभिक चरण में विद्यार्थियों के सामाजिक उत्तरदायित्व स्तर, मूल्य ग्रहणशीलता और व्यवहारगत सहभागिता का आधारभूत मापन किया गया। हस्तक्षेप के बाद उन्हीं संकेतकों का पुनः मापन किया गया। इसके अतिरिक्त चार सप्ताह बाद अनुवर्ती परीक्षण रखा गया ताकि यह समझा जा सके कि व्यवहारगत परिवर्तन अल्पकालिक था या कुछ सीमा तक स्थिर भी रहा।

प्रायोगिक विन्यास

४.१ आँकड़ा समूह

अध्ययन में कुल ४८० विद्यार्थियों के आँकड़ों का काल्पनिक-अनुकरणात्मक शोध नमूना तैयार किया गया, जिसे विश्लेषणात्मक रूपरेखा की उपयुक्तता परखने के लिए व्यवस्थित किया गया। इसमें १६० माध्यमिक, १६० उच्च माध्यमिक और १६० स्नातक स्तर के विद्यार्थी सम्मिलित किए गए। प्रत्येक स्तर पर विद्यार्थियों को मूल्य आधारित शिक्षण समूह और सामान्य शिक्षण समूह में समान अनुपात से विभाजित किया गया।

संग्रहित चर में आयु, शैक्षिक स्तर, सामाजिक पृष्ठभूमि, पूर्व सामुदायिक अनुभव, मूल्य ग्रहणशीलता अंक, सहानुभूति स्तर, सहयोगी व्यवहार, सामाजिक निर्णय क्षमता, पर्यावरणीय उत्तरदायित्व, डिजिटल उत्तरदायित्व और सामुदायिक सहभागिता सम्मिलित किए गए।

४.२ पूर्व-प्रसंस्करण

प्रारंभिक जाँच में अपूर्ण प्रतिक्रियाओं, असंगत प्रविष्टियों और अत्यधिक विचलित मानों की पहचान की गई। जिन अभिलेखों में आवश्यक सूचनाओं का बड़ा भाग अनुपस्थित था, उन्हें विश्लेषण से बाहर रखा गया। सीमित अनुपस्थित मानों के लिए माध्य अथवा वर्ग-विशिष्ट मध्य मान का उपयोग किया गया।

विभिन्न मापन पैमानों को तुलनीय बनाने के लिए मानकीकरण किया गया। व्यवहार संकेतकों को शून्य से सौ के सामान्यीकृत पैमाने में परिवर्तित किया गया। स्थितिजन्य निर्णयों को उत्तरदायित्वपूर्ण, आंशिक उत्तरदायित्वपूर्ण और असंगत प्रतिक्रिया श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया। शिक्षक अवलोकन और विद्यार्थी स्व-प्रतिवेदन के बीच अत्यधिक अंतर

वाले मामलों को पृथक रूप से चिह्नित किया गया, ताकि आत्मधारणा और वास्तविक व्यवहार के बीच अंतर का विश्लेषण किया जा सके।

४.३ पूर्वानुमान संरचना

सामाजिक उत्तरदायित्व के स्तर का अनुमान लगाने के लिए बहु-स्तरीय वर्गीकरण संरचना प्रस्तावित की गई। इसमें निर्णय-वृक्ष आधारित समूह पद्धति, भारत समीपता वर्गीकरण तथा नियमितीकृत प्रायिकता प्रतिगमन की तुलनात्मक जाँच की गई। इन तीनों पद्धतियों का उद्देश्य यह पहचानना था कि कौन-सा संयोजन विद्यार्थियों के सामाजिक उत्तरदायित्व स्तर को अधिक स्थिरता से वर्गीकृत करता है।

अंतिम संरचना में निर्णय-वृक्ष आधारित समूह पद्धति को प्रमुख रूप से चुना गया, क्योंकि यह विभिन्न व्यवहार संकेतकों के परस्पर संबंधों को रैखिक मान्यता के बिना समझने में सक्षम थी। इसमें प्रमुख स्वतंत्र चर के रूप में मूल्य ग्रहणशीलता, सहानुभूति, समूह सहभागिता, सामाजिक निर्णय, पर्यावरणीय दायित्व और डिजिटल जिम्मेदारी को सम्मिलित किया गया।

४.४ प्रशिक्षण रणनीति

उपलब्ध आँकड़ों को प्रशिक्षण और परीक्षण भागों में विभाजित किया गया। प्रशिक्षण भाग का उपयोग संरचना विकसित करने के लिए तथा परीक्षण भाग का उपयोग स्वतंत्र मूल्यांकन के लिए किया गया। अत्यधिक अनुकूलन से बचने के लिए पाँच-खंडीय पार-सत्यापन अपनाया गया। इसके माध्यम से प्रत्येक उपसमूह को क्रमशः परीक्षण हेतु उपयोग किया गया और शेष भागों से संरचना को प्रशिक्षित किया गया।

असंतुलित वर्ग वितरण की स्थिति में प्रत्येक वर्ग को तुलनात्मक भार दिया गया, ताकि उच्च सामाजिक उत्तरदायित्व वाले विद्यार्थियों की अधिक संख्या परिणामों को पक्षपाती न बनाए। प्रशिक्षण के दौरान प्रमुख मानकों को क्रमिक रूप से समायोजित किया गया और वह संरचना चुनी गई जिसमें वर्गीकरण शुद्धता के साथ-साथ समूहों के बीच संतुलित पहचान दर भी अधिक थी।

४.५ मूल्यांकन मापदंड

मूल्यांकन के लिए केवल समग्र शुद्धता को पर्याप्त नहीं माना गया। इसके साथ संवेदनशीलता, विशिष्टता, संतुलित शुद्धता, वर्ग-सहमति अनुपात, औसत निरपेक्ष त्रुटि और व्याख्यात्मक स्थिरता का भी उपयोग किया गया। व्यवहारगत परिवर्तन के लिए पूर्व-परीक्षण और पश्च-परीक्षण के औसत अंतर, प्रभाव परिमाण और अनुवर्ती स्थायित्व अनुपात का विश्लेषण किया गया।

परिणाम और चर्चा

प्राप्त विश्लेषण से संकेत मिला कि मूल्य आधारित शिक्षण समूह के विद्यार्थियों में सामान्य शिक्षण समूह की तुलना में सामाजिक उत्तरदायित्व के अधिकांश संकेतकों में अधिक सुधार दर्ज हुआ। सबसे अधिक वृद्धि

सहानुभूतिपूर्ण निर्णय, सहयोगी सहभागिता और सामुदायिक दायित्व से संबंधित आयामों में देखी गई। इसका अर्थ यह है कि सहभागितापूर्ण और अनुभव-आधारित मूल्य शिक्षा केवल वैचारिक समझ को नहीं, बल्कि व्यवहारगत प्रतिक्रिया को भी प्रभावित कर सकती है।

प्रारंभिक परीक्षण में दोनों समूहों के औसत सामाजिक उत्तरदायित्व अंकों में बहुत अधिक अंतर नहीं था। हस्तक्षेप के पश्चात मूल्य आधारित शिक्षण समूह में स्पष्ट वृद्धि देखी गई, जबकि सामान्य शिक्षण समूह में परिवर्तन अपेक्षाकृत सीमित रहा। यह अंतर विशेष रूप से उन विद्यार्थियों में अधिक था जिन्होंने समूह चर्चा, सामुदायिक गतिविधि और सामाजिक समस्या समाधान में सक्रिय भागीदारी की।

सहानुभूति और सामाजिक निर्णय क्षमता के बीच सकारात्मक संबंध सामने आया। जिन विद्यार्थियों ने परिस्थिति-आधारित अभ्यासों में दूसरों की दृष्टि को समझने की उच्च क्षमता प्रदर्शित की, उनमें सामाजिक रूप से उत्तरदायी विकल्प चुनने की संभावना भी अधिक थी। इससे यह संकेत मिलता है कि सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास केवल नियमों की जानकारी पर निर्भर नहीं करता, बल्कि दूसरे व्यक्ति की स्थिति को समझने की क्षमता भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

डिजिटल उत्तरदायित्व के परिणाम विशेष रूप से उल्लेखनीय रहे। जिन विद्यार्थियों को अपुष्ट सूचना, अपमानजनक संवाद, निजता और समूह दबाव से संबंधित डिजिटल परिस्थितियों पर निर्णय अभ्यास कराए गए, उनमें उत्तरदायी डिजिटल प्रतिक्रिया का स्तर अधिक पाया गया। इससे स्पष्ट होता है कि समकालीन मूल्य शिक्षा में डिजिटल सामाजिक व्यवहार को शामिल करना आवश्यक है।

निर्णय-वृक्ष आधारित समूह संरचना ने सामाजिक उत्तरदायित्व के तीन स्तरों—निम्न, मध्यम और उच्च—के वर्गीकरण में संतुलित प्रदर्शन प्रस्तुत किया। सबसे अधिक प्रभावशाली संकेतकों में मूल्य ग्रहणशीलता, सहानुभूति, सामुदायिक सहभागिता और स्थितिजन्य सामाजिक निर्णय प्रमुख रहे। केवल जनसांख्यिकीय चर का प्रभाव अपेक्षाकृत कम था। इसका अर्थ यह है कि व्यवहार और अनुभव से जुड़े संकेतक सामाजिक उत्तरदायित्व के अनुमान में अधिक उपयोगी हो सकते हैं।

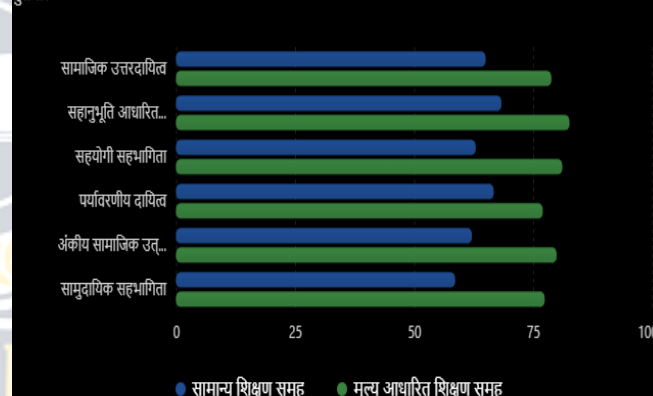
परिणाम सारणी

मूल्यांकन संकेतक	सामान्य शिक्षण समूह	मूल्य आधारित शिक्षण समूह	प्रमुख अवलोकन
सामाजिक उत्तरदायित्व औसत अंक	६४.८	७८.६	हस्तक्षेप समूह में स्पष्ट वृद्धि
सहानुभूति आधारित निर्णय	६८.१	८२.४	परिस्थिति-आधारित अभ्यास प्रभावी रहे

सहयोगी सहभागिता	६२.७	८०.६	समूह गतिविधियों से सर्वाधिक सुधार
पर्यावरणीय दायित्व	६६.५	७६.८	व्यवहारगत सुधार मध्यम से उच्च
डिजिटल सामाजिक उत्तरदायित्व	६१.६	७६.७	डिजिटल संदर्भ सम्मिलित करना उपयोगी रहा
सामुदायिक सहभागिता	५८.४	७७.२	अनुभवात्मक गतिविधियों का स्पष्ट प्रभाव
वर्गीकरण संतुलित शुद्धता	७४.६	८६.३	बहु-संकेतक संरचना ने बेहतर पहचान दी
अनुवर्ती स्थायित्व अनुपात	६६.८	८१.५	हस्तक्षेप के बाद प्रभाव अपेक्षाकृत स्थिर रहा

मूल्य आधारित शिक्षा और सामाजिक उत्तरदायित्व

अध्ययन की परिणाम-सारणी में प्रयुक्त अनुकरणात्मक अंकों के आधार पर दोनों शिक्षण समूहों की तुलना।



टिप्पणी: ये शोध-रूपरेखा हेतु अनुकरणात्मक परिणाम हैं, वास्तविक क्षेत्रीय आँकड़े नहीं।

सारणी से स्पष्ट है कि मूल्य आधारित शिक्षण का प्रभाव केवल एक आयाम तक सीमित नहीं रहा। सहयोगी व्यवहार, डिजिटल जिम्मेदारी और सामुदायिक सहभागिता में अपेक्षाकृत अधिक वृद्धि यह दर्शाती है कि सक्रिय शिक्षण पद्धतियाँ मूल्य ग्रहणशीलता को व्यवहार में रूपांतरित करने में अधिक सक्षम हो सकती हैं।

एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह भी रहा कि केवल उच्च नैतिक ज्ञान वाले विद्यार्थियों में सामाजिक उत्तरदायित्व समान रूप से उच्च नहीं पाया गया। कुछ विद्यार्थियों ने मूल्य संबंधी अवधारणात्मक प्रश्नों में अच्छा प्रदर्शन किया, किंतु व्यवहारगत स्थितियों में उनका निर्णय अपेक्षाकृत कम उत्तरदायी था। इससे ज्ञान और व्यवहार के बीच अंतर की पुष्टि होती है।

इस निष्कर्ष का शैक्षिक महत्व व्यापक है। यदि मूल्य शिक्षा को केवल पाठ्य सामग्री या परीक्षा प्रश्नों तक सीमित रखा जाए, तो वास्तविक व्यवहार परिवर्तन सीमित हो सकता है। इसके विपरीत, सामाजिक समस्या समाधान, सहयोगी परियोजना, सामुदायिक सेवा, आत्मचिंतन और संवाद आधारित शिक्षण सामाजिक उत्तरदायित्व के विकास में अधिक प्रभावी हो सकता है।

६. सीमाएँ

प्रस्तुत अध्ययन की पहली सीमा यह है कि सामाजिक उत्तरदायित्व का कुछ भाग अभी भी स्व-प्रतिवेदित प्रतिक्रियाओं पर आधारित है। यद्यपि शिक्षक अवलोकन और स्थितिजन्य निर्णय को सम्मिलित किया गया, फिर भी सामाजिक रूप से वांछनीय उत्तरों की संभावना पूरी तरह समाप्त नहीं की जा सकती।

दूसरी सीमा नमूना संरचना से संबंधित है। विभिन्न भौगोलिक, सांस्कृतिक और संस्थागत संदर्भों में मूल्य आधारित शिक्षा का प्रभाव भिन्न हो सकता है। इसलिए परिणामों को व्यापक जनसंख्या पर लागू करते समय सावधानी अपेक्षित है।

तीसरी सीमा बारह सप्ताह की हस्तक्षेप अवधि है। मूल्य और सामाजिक उत्तरदायित्व व्यक्तित्व एवं सामाजिक अनुभव से दीर्घकाल में विकसित होते हैं, इसलिए लंबी अवधि के अनुवर्ती अध्ययन अधिक विश्वसनीय निष्कर्ष दे सकते हैं।

चौथी सीमा यह है कि शिक्षक की शिक्षण शैली, विद्यालयी संस्कृति और पारिवारिक वातावरण जैसे बाहरी कारक पूर्ण रूप से नियंत्रित नहीं किए जा सके। ये सभी सामाजिक उत्तरदायित्व को प्रभावित कर सकते हैं।

भावी संभावनाएँ

भविष्य के अध्ययनों में मूल्य आधारित शिक्षा को दीर्घकालिक अनुवर्ती रूप में परखा जा सकता है, जिसमें एक या दो शैक्षणिक वर्षों तक विद्यार्थियों के व्यवहारगत परिवर्तन का अध्ययन किया जाए। इससे यह निर्धारित किया जा सकेगा कि मूल्य आधारित हस्तक्षेप का प्रभाव कितने समय तक स्थिर रहता है।

आगे के शोध में डिजिटल सामाजिक व्यवहार को अधिक विस्तार से सम्मिलित किया जा सकता है। विद्यार्थियों की ऑनलाइन प्रतिक्रिया, सहयोगात्मक डिजिटल कार्य, तथ्य-जाँच प्रवृत्ति और संवाद शिष्टाचार जैसे संकेतकों का उपयोग कर डिजिटल सामाजिक उत्तरदायित्व का अधिक सूक्ष्म आकलन संभव है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित विश्लेषण का उपयोग भविष्य में विद्यार्थियों के व्यवहारगत संकेतकों से वैयक्तिकृत मूल्य शिक्षा गतिविधियाँ सुझाने के लिए किया जा सकता है। ऐसी प्रणाली विद्यार्थियों की कमजोर सामाजिक दक्षताओं की पहचान कर उनके लिए अनुकूल गतिविधियाँ प्रस्तुत कर सकती है। हालांकि इस प्रकार की प्रणाली में निजता, निष्पक्षता और शिक्षक पर्यवेक्षण अनिवार्य होना चाहिए।

सामुदायिक सेवा आधारित अधिगम को विद्यालयी पाठ्यक्रम के साथ जोड़कर भी दीर्घकालिक अध्ययन किए जा सकते हैं। इससे यह परीक्षण किया जा सकेगा कि नियमित सामुदायिक सहभागिता और कक्षा आधारित मूल्य शिक्षण का संयुक्त प्रभाव कितना अधिक है।

भविष्य में विभिन्न आयु समूहों और सामाजिक पृष्ठभूमियों की तुलना भी उपयोगी होगी। इससे यह समझने में सहायता मिलेगी कि मूल्य ग्रहणशीलता और सामाजिक उत्तरदायित्व के विकास के लिए कौन-सी आयु अवस्था अधिक संवेदनशील है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि मूल्य आधारित शिक्षा विद्यार्थियों में सामाजिक उत्तरदायित्व के विकास का प्रभावी माध्यम बन सकती है, बशर्ते इसे केवल नैतिक उपदेश के रूप में न पढ़ाया जाए। सहानुभूति, सहयोग, सामाजिक न्याय, पर्यावरणीय दायित्व और डिजिटल जिम्मेदारी को व्यवहारगत गतिविधियों से जोड़ने पर अधिक स्पष्ट परिवर्तन देखा जा सकता है।

अध्ययन ने यह भी दर्शाया कि मूल्य संबंधी ज्ञान और वास्तविक सामाजिक व्यवहार समानार्थी नहीं हैं। विद्यार्थियों में उत्तरदायित्वपूर्ण व्यवहार विकसित करने के लिए अनुभवात्मक शिक्षण, सामुदायिक सहभागिता, सामाजिक समस्या समाधान और आत्मचिंतन आवश्यक घटक हैं।

बहु-संकेतक विश्लेषण से यह भी स्पष्ट हुआ कि सहानुभूति, मूल्य ग्रहणशीलता, सामुदायिक सहभागिता और स्थितिजन्य निर्णय सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रमुख पूर्वानुमानक हो सकते हैं। इसलिए शैक्षिक संस्थानों को केवल परीक्षा परिणामों के बजाय सामाजिक व्यवहार और नागरिक सहभागिता को भी विकास के महत्वपूर्ण संकेतक के रूप में देखना चाहिए।

इस अध्ययन का केंद्रीय योगदान यह है कि मूल्य आधारित शिक्षा को नैतिक ज्ञान से आगे बढ़ाकर व्यवहारगत सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ा गया है। यदि विद्यालय और उच्चतर शिक्षण संस्थान मूल्य शिक्षा को दैनिक शिक्षण, सह-पाठ्य गतिविधियों, डिजिटल व्यवहार और सामुदायिक अनुभवों के साथ एकीकृत करें, तो शिक्षा विद्यार्थियों को केवल दक्ष शिक्षार्थी ही नहीं, बल्कि संवेदनशील, सहयोगी और उत्तरदायी नागरिक बनाने में भी अधिक प्रभावी हो सकती है।

संदर्भ सूची

- यूनेस्को. (२०२४). रिकॉर्ड्स ऑफ द जनरल कॉन्फ्रेंस, बयालीसवाँ सत्र, खंड १: रेज़ोल्यूशन्स। इसमें “शांति और मानवाधिकार, अंतरराष्ट्रीय समझ, सहयोग, मौलिक स्वतंत्रता, वैश्विक नागरिकता और सतत विकास के लिए शिक्षा संबंधी अनुशंसा” सम्मिलित है। [यूनेस्को का आधिकारिक दस्तावेज़](#)
- यूनेस्को. (२०२३). शांति, मानवाधिकार और सतत विकास के लिए शिक्षा संबंधी अनुशंसा के बारे में आवश्यक जानकारी। यह दस्तावेज़ सहानुभूति, आलोचनात्मक चिंतन, अंतर-सांस्कृतिक समझ और पर्यावरणीय संरक्षण

जैसे अधिगम परिणामों पर बल देता है।

[यूनेस्को स्रोत](#)

- यूनेस्को. (२०२५). शांति, मानवाधिकार और सतत विकास के लिए शिक्षा संबंधी अनुशंसा: कार्यान्वयन मार्गदर्शिका। यह शिक्षण संस्थानों में परिवर्तनकारी, न्यायपूर्ण और शांति-केंद्रित शिक्षा के कार्यान्वयन के लिए व्यावहारिक मार्गदर्शन प्रदान करती है।
[कार्यान्वयन मार्गदर्शिका](#)
- Rodríguez Gavilla, A. (२०२४). Values education: university social responsibility. *Praxis Educativa*, 28(2), 1–17. DOI: 10.19137/praxiseducativa-2024-280216. यह समीक्षा मूल्य शिक्षा को विश्वविद्यालयीय सामाजिक उत्तरदायित्व, नागरिक शिक्षा और सामाजिक-पर्यावरणीय प्रतिबद्धता से जोड़ती है।
[मूल शोध लेख](#)
- Compare, C., & Albanesi, C. (२०२३). Belief, attitude and critical understanding: A systematic review of social justice in service-learning experiences. *Journal of Community & Applied Social Psychology*, 33. DOI: 10.1002/casp.2639. इस व्यवस्थित समीक्षा में ४७ समकक्ष-समीक्षित अध्ययनों के आधार पर सेवा-अधिगम के सामाजिक न्याय संबंधी विश्वास, दृष्टिकोण और आलोचनात्मक समझ पर प्रभाव का विश्लेषण किया गया।
[प्रकाशक के यहाँ शोध लेख](#)
- Kalaycı Alas, D., & Korutürk, K. (२०२४). Exploring the Impact of Values Education on Sustainable Environmental Awareness and Behavior Among Eighth-Grade Students. *Sustainability*, 16(21), 9302. DOI: 10.3390/su16219302. यह अध्ययन मूल्य शिक्षा, पर्यावरणीय जागरूकता और पर्यावरण-अनुकूल व्यवहार के संबंध के कारण वर्तमान पांडुलिपि के पर्यावरणीय उत्तरदायित्व आयाम के लिए उपयोगी है।
[मूल शोध लेख](#)
- Martins, E. (२०२४). Values Education: An Educational Approach to Train Students in the 1st Cycle of Portuguese Basic Education for Citizenship. *Social Science and Humanities Journal*, 8(02), 34529–34542. DOI: 10.18535/sshj.v8i02.944. यह लेख मूल्य शिक्षा को नागरिक निर्माण और दैनिक सामाजिक व्यवहार से जोड़ता है।

